

डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 28, इंजीलवाद और मूल्यांकन

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 28 है, इंजीलवाद और मूल्यांकन।

हम उनमें से कुछ नामों पर वापस आ सकते हैं। मैं आपकी रूपरेखा में चौथे और पाँचवें नंबर पर हूँ, और फिर हम अगला व्याख्यान करेंगे, जो ज़्यादा समय नहीं लेता और आधुनिक दुनिया में अमेरिकी ईसाई धर्म की तरह है। आज हम अमेरिकी ईसाई धर्म के साथ कहाँ हैं? तो, अगला है इंजीलवाद के सिद्धांत।

महत्वपूर्ण सिद्धांत क्या थे? महत्वपूर्ण सिद्धांत क्या थे? उन्होंने किस बात पर जोर दिया? और आप इसे आज गॉर्डन में पा सकते हैं क्योंकि गॉर्डन खुद को एक इंजील संस्था के रूप में पहचानता है। तो, उनमें से कुछ सिद्धांत हैं, और उनमें से कुछ सिद्धांत हैं, जो यहाँ एक तरह से मिश्रित चीज हैं जो वास्तव में इंजीलवाद का समर्थन करती हैं। ठीक है, नंबर एक।

इंजीलवाद ने कुछ कट्टरपंथियों की बौद्धिकता-विरोधी और वैज्ञानिकता-विरोधी भावनाओं पर काबू पाने की पूरी कोशिश की, न कि सभी कट्टरपंथियों की, लेकिन इसने कुछ कट्टरपंथियों की बौद्धिकता-विरोधी भावनाओं पर काबू पाने की कोशिश की। और इंजीलवाद कहता है कि हम इस तथ्य के प्रति प्रतिबद्ध हैं कि सभी सत्य ईश्वर का सत्य है। तो चाहे वह सत्य दार्शनिक सत्य हो, गणितीय सत्य हो, या वैज्ञानिक सत्य हो, यह सब ईश्वर से है।

वह सभी सत्यों का लेखक है। इसलिए, सुसमाचारवाद ने वास्तव में खुद को इस तरह के दृष्टिकोण के लिए प्रतिबद्ध किया कि ईश्वर के अध्ययन और उसकी दुनिया के अध्ययन में मन के साथ-साथ हृदय का उपयोग करना क्या है। नंबर दो, सुसमाचारवाद शास्त्र के बहुत उच्च दृष्टिकोण, बाइबिल के उच्च दृष्टिकोण के लिए प्रतिबद्ध था।

वे जो करना चाहते थे, वह हमारे दृष्टिकोण, धर्मग्रंथ की सुधारवादी समझ, और सुधारकों ने अपनी महान बुद्धि के साथ-साथ अपने महान हृदय से बाइबिल को कैसे समझा, को वापस लाना था। इसलिए, इसने सुधारवादियों से, सुधारवादियों से एक तरह के व्याख्यात्मक सिद्धांतों का उपयोग किया। और इसलिए, लोगों के लिए परमेश्वर के वचन के रूप में बाइबिल की इस तरह की नई समझ वास्तव में महत्वपूर्ण थी।

मैं सामान्य तौर पर यही कहूंगा, और मैं यहाँ स्पष्ट रूप से सामान्य तौर पर ही बोल रहा हूँ, लेकिन मैं सामान्य तौर पर यही कहूंगा कि इंजीलवादियों के लिए, जो महत्वपूर्ण है वह है पवित्र मार्ग का उद्देश्य। बाइबिल के मार्ग का उद्देश्य क्या है? परमेश्वर पवित्र आत्मा का क्या मतलब था, और लेखक का क्या मतलब था जब लेखक पवित्र आत्मा द्वारा एक विशेष मार्ग लिखने के लिए प्रेरित हुआ था? उद्देश्य क्या है? वहाँ उद्देश्य क्या है? तो हमेशा, यह मेरे लिए वैसे भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न

है। मार्ग का उद्देश्य क्या है? अब, एलिस्टेयर मैकग्राथ, और आप उनका नाम अच्छी तरह से जानते हैं, ने एक बहुत ही आकर्षक पुस्तक लिखी है, और इसका नाम है इंजीलवाद और ईसाई धर्म का भविष्य।

तो मैं आपको गर्मियों में पढ़ने के लिए उस पाठ पर प्रोत्साहित करता हूँ, इंजीलवाद और ईसाई धर्म का भविष्य। और हम पहले ही बता चुके हैं कि एलिस्टेयर मैकग्राथ इंजीलवाद के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि उन्होंने इंजीलवादी विचारों को गढ़ा है। अब, अपनी पुस्तक में, वह निश्चित रूप से बाइबल और बाइबल के महत्व के बारे में काफी कुछ बताते हैं।

वह जो करता है वह यह है कि उसके पास दो प्रमुख सिद्धांत हैं, और उसे लगता है कि इन दो प्रमुख सिद्धांतों को शास्त्रों की सुसमाचारी समझ का मार्गदर्शन करना चाहिए, जिसका अर्थ है, शास्त्रों की सुधारवादी समझ। तो यहाँ मैकग्राथ के दो प्रमुख सिद्धांत हैं। तो अब, पहला सिद्धांत यह है कि जो विचार बाइबल के प्रति वफ़ादार होने का प्रयास करते हैं, उन्हें सम्मान देना चाहिए, सम्मान पाना चाहिए और सम्मान पाना चाहिए।

इसलिए, बाइबल के प्रति वफ़ादार होने का प्रयास करने वाले विचारों का सम्मान किया जाना चाहिए और उनका सम्मान किया जाना चाहिए, और उन विचारों का इंजीलवादियों द्वारा सम्मान किया जाना चाहिए, यहाँ तक कि, मैकग्राथ कहते हैं, तब भी जब एक ही मार्ग से विचारों की बहुलता आती है। इसलिए यहाँ तक कि जहाँ एक ही मार्ग से विचारों की बहुलता आती है, आपको लोगों का सम्मान और आदर करना चाहिए। यदि आप एक इंजीलवादी हैं, तो आपको उन मार्गों पर लोगों की स्थिति का सम्मान और सम्मान करना चाहिए। तो यह एक तरह का सिद्धांत है जो उन्होंने दिया है, और उन्होंने कहा कि जब बाइबल की बात आती है तो इसे इंजीलवादियों की सोच का मार्गदर्शन करना चाहिए।

दूसरा सिद्धांत जो उन्होंने दिया है वह यह है कि यदि धर्मग्रंथ किसी मुद्दे को स्पष्ट नहीं करता है, तो उनका कहना है कि यह बहस का विषय है कि वास्तव में वह मुद्दा कितना महत्वपूर्ण है। इसलिए, यदि बाइबल किसी मुद्दे पर स्पष्टता नहीं देती है, तो आपको, एक इंजीलवादी के रूप में, उनका कहना है, उनका दावा है, आपको पूछना होगा कि वह मुद्दा कितना महत्वपूर्ण है। वह मामला कितना महत्वपूर्ण है? इसलिए, वह बाइबल को उच्च दृष्टिकोण से देखते हैं। उनका कहना है कि इंजीलवादियों को बाइबल के अंशों के माध्यम से भूलभुलैया से बाहर निकलने में मदद करने के लिए कुछ सिद्धांतों की आवश्यकता है, लेकिन निश्चित रूप से धर्मग्रंथ का महत्व और धर्मग्रंथ के प्रति उच्च दृष्टिकोण।

व्यक्तिगत रूप से, मैं यहाँ एक इंजीलवादी के रूप में अपनी निजी राय दे रहा हूँ, लेकिन व्यक्तिगत रूप से, विशेष रूप से वेस्लेयन परंपरा से आने के कारण, मुझे आधिकारिक शब्द पसंद है, जिसका अर्थ है कि शास्त्र आधिकारिक है। यह ईसाई धर्म और व्यवहार के लिए अधिकार है। इसलिए, मुझे वह शब्द पसंद है, जो एक ऐसा शब्द है जिसे वेस्ले ने मूल रूप से बाइबल के लिए इस्तेमाल किया था।

यह हमारे जीवन के लिए एक प्रामाणिक पुस्तक है। ठीक है। तो यह नंबर दो है।

तीसरा, इंजीलवाद का एक सिद्धांत, पवित्र आत्मा का प्रभुत्व होगा। इंजीलवाद त्रिएकत्व को हमारे मन में वापस लाने में महत्वपूर्ण रहा है। बहुत से लोग परमेश्वर, पिता और परमेश्वर पुत्र के बारे में बात कर रहे थे, लेकिन पवित्र आत्मा के बारे में क्या? खैर, इंजीलवादी आंदोलनों ने पवित्र आत्मा को हमारे ध्यान में वापस लाया है और विश्वासी के जीवन और चर्च के जीवन पर पवित्र आत्मा के प्रभुत्व को स्थापित किया है।

तो यह नंबर तीन है। नंबर चार व्यक्तिगत रूपांतरण पर जोर देता है। यह वह तरीका है जिससे लोग यीशु मसीह के साथ अपनी पहचान बनाते हैं और इस तथ्य का नवीनीकरण करते हैं कि मसीह ईसाई धर्म का केंद्र है।

मसीह ईसाई धर्म का हृदय है, ईसाई धर्म का केंद्र है। यह वैसा ही है जैसा कि डिट्रिच बोनहोफर ने कहा था: मसीह रोटी के बाद परोसा जाने वाला व्यंजन नहीं है। मसीह स्वयं रोटी है या कुछ भी नहीं है।

इसलिए, मसीह को कहानी के केंद्र में वापस लाना, यहीं पर सब कुछ है। तो अब, व्यक्तिगत रूपांतरण पर इस जोर के तहत, मुझे लगता है कि इंजीलवादियों को इस बारे में बहुत सावधान रहने की ज़रूरत है कि व्यक्तिगत रूपांतरण का अनुभव करने का एक ही तरीका है। ऐतिहासिक रूप से इंजीलवादी इस बात को लेकर बहुत चिंतित रहे हैं कि लोग नाटकीय रूप से परिवर्तित हो रहे हैं और अपनी वास्तविक आध्यात्मिक जन्म तिथि बताने में सक्षम हैं।

खैर, ऐसा कुछ लोगों के जीवन में हो सकता है। अन्य लोगों के लिए, धर्म परिवर्तन का अनुभव धीरे-धीरे समझ में आने वाला हो सकता है जब तक कि वे अपने जीवन में उस स्थिति तक नहीं पहुँच जाते जहाँ वे कहते हैं कि मसीह मेरे जीवन का प्रभु है। लेकिन मुझे लगता है कि हमें सावधान रहने की ज़रूरत है कि हम इस व्यक्तिगत धर्म परिवर्तन के अनुभव को सभी लोगों के अनुभव में बदलने की कोशिश न करें।

महत्वपूर्ण बात यह है कि ईसाई मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में पहचानते हैं। यह वास्तव में महत्वपूर्ण बात है। लेकिन हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम इसे सार्वभौमिक न बना दें।

ठीक है, तो व्यक्तिगत रूपांतरण पर जोर दिया गया है। सुसमाचार प्रचार के लिए अगला कदम सुसमाचार प्रचार को प्राथमिकता देना होगा। इसलिए, सुसमाचार प्रचार की प्राथमिकताएँ अलग-अलग हैं, लेकिन सुसमाचार प्रचार के साधन भी अलग-अलग हैं।

तो, सुसमाचार प्रचार करने और सुसमाचार की गवाही देने के बहुत से तरीके हैं। तो, मैंने पहले ही गवाही दे दी है कि जब मैं हवाई जहाज़ पर उड़ान भर रहा होता हूँ तो मैं क्या नहीं करता। लेकिन आप में से कुछ लोगों को हवाई जहाज़ पर उड़ान भरना एक शानदार अवसर लग सकता है।

और अगर यह आपके व्यक्तित्व और आप जो करना चाहते हैं उससे मेल खाता है, तो यह सुंदर है। यह सुसमाचार प्रचार का एक तरीका है, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए, चाहे हम कोई भी माध्यम अपनाएँ, सुसमाचार प्रचार को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है।

दूसरा वह है जिसने इंजीलवाद को एक बहुत मजबूत सामाजिक चेतना के रूप में पहचाना है। ऐतिहासिक रूप से, मैं एक नाम की ओर मुड़ना चाहता हूँ। वास्तव में, आप जानते हैं, मुझे लगता है कि मैं इसे छोड़ दूंगा और बस उसी पर वापस आऊंगा, लेकिन एक बहुत मजबूत सामाजिक चेतना।

जैसा कि हमने वीडियो में देखा, मेरे दोस्त बॉब कह रहे थे कि गरीबों की देखभाल करना पैगम्बरों के दिमाग में सबसे ऊपर है। जब आप जाते हैं तो झुक जाते हैं, ठीक है, यह पैगम्बरों के दिमाग में सबसे ऊपर है। यह यीशु के दिमाग में सबसे ऊपर है, गरीबों की देखभाल करना।

और इसलिए यह एक सुसमाचारी देखभाल और चिंता है। अब, सवाल यह है कि क्या हम इसके प्रति वफादार रहे हैं? खैर, हम इसे तब देखेंगे जब हम सुसमाचारीवाद की कुछ कमज़ोरियों को देखेंगे। इसलिए, मुझे यकीन नहीं है कि हम हमेशा से ही वफादार रहे हैं, लेकिन हम इसके बारे में बाद में बात करेंगे।

लेकिन गरीबों की देखभाल करना, इसमें कोई संदेह नहीं है, मजबूत सामाजिक विवेक, इसमें कोई संदेह नहीं है। तो, ठीक है। इंजीलवाद का एक और सिद्धांत जो मुझे लगता है कि वास्तव में महत्वपूर्ण है, वह यह मान्यता है कि ईसाई सत्य और ईसाई प्रतिबद्धता सभी संप्रदायों में पाई जाती है।

ईसाई सत्य और ईसाई प्रतिबद्धता सभी संप्रदायों में पाई जाती है। एलिस्टेयर मैकग्राथ के इंजीलवाद और ईसाई धर्म के भविष्य के बारे में एक बिंदु यह है कि इंजीलवाद वास्तव में एक ट्रांस-संप्रदायिक आंदोलन है। यह सिर्फ एक संप्रदाय या दूसरे संप्रदाय में स्थित आंदोलन नहीं है।

यह ट्रांस-डिनोमिनेशनल है। और यह आज वास्तव में ट्रांस-डिनोमिनेशनल है क्योंकि रोमन कैथोलिक हैं जो खुद को इंजीलवादी के रूप में पहचानते हैं। पूर्वी रूढ़िवादी लोग हैं जो खुद को इंजीलवादी के रूप में पहचानते हैं।

और इसलिए, इंजीलवाद यह कहने की स्थिति में है कि हम सभी संप्रदायों की सीमाओं को पार करते हैं और यह स्वीकार करते हैं कि सभी में सत्य पाया जाता है। अब, हम रूढ़िवादी संप्रदायों के बारे में बात कर रहे हैं। अब हम उन लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जो त्रिदेवों को गंभीरता से लेते हैं, यीशु मसीह को प्रभु के रूप में, स्वयं ईश्वर के रूप में और इसी तरह गंभीरता से लेते हैं।

इस कोर्स में, हमने कई सीमांत समूहों को देखा है जो कभी-कभी अजीब और अद्भुत होते हैं। लेकिन हम रूढ़िवादी समुदायों और उन समुदायों के भीतर समझ के बारे में बात कर रहे हैं जो शब्द को गंभीरता से लेते हैं। लेकिन इंजीलवाद निश्चित रूप से ट्रांस-डिनोमिनेशनल है और साथ ही विविध भी है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

आठवाँ, इंजीलवाद के सिद्धांतों के संदर्भ में अंतिम बात यह है कि इंजीलवाद भविष्य के लिए अपनी प्रतिबद्धताओं को समझने की कोशिश करता है। इसकी प्रतिबद्धताएँ क्या हैं? यह भविष्य में कहाँ जा रहा है? अपनी पुस्तक में, एलिस्टेयर मैकग्राथ ने भविष्य में इंजीलवाद की दिशा के बारे में कुछ दृष्टिकोण देने की कोशिश की है। अब, उन्होंने तीन बातों का उल्लेख किया है जिनका उल्लेख उन्होंने सार्वजनिक व्याख्यानों, अन्य लेखों, इत्यादि में किया है।

तो भविष्य में इंजीलवाद के संदर्भ में सोचने के लिए तीन बातें हैं। नंबर एक, इंजीलवाद और सार्वजनिक नीति। क्या इंजीलवादियों का सार्वजनिक क्षेत्र में कोई स्थान है? और इसलिए, क्या उनका सार्वजनिक नीति निर्माण में कोई स्थान है? हाँ, बेशक, उनका स्थान है क्योंकि यह दुनिया ईश्वर की दुनिया है।

अगर वे समझते हैं कि यह दुनिया ईश्वर की दुनिया है, और अगर इंजीलवादी खुद को ईश्वर की दुनिया के प्रबंधक समझते हैं, तो इंजीलवादियों को सार्वजनिक नीति के मामलों में शामिल होने से पीछे नहीं हटना चाहिए। आम भलाई के लिए सबसे अच्छी बात क्या है? इसलिए, इंजीलवादियों को इससे पीछे नहीं हटना चाहिए। इंजीलवादियों को चर्चा में शामिल होना चाहिए।

इवेंजेलिकल्स को चर्चा में सबसे आगे रहना चाहिए। विभिन्न मामलों के बारे में बाइबल आधारित राय व्यक्त करने से न डरें। इसलिए, सार्वजनिक नीति उन चीजों में से एक है जिसके बारे में वह बात करते हैं।

दूसरी बात जिसके बारे में वह बात करते हैं वह है रूढ़िवादिता और नैतिकता के मुद्दों पर अन्य ईसाइयों के साथ सहयोग। हम रूढ़िवादिता या धर्मशास्त्र, अच्छे, स्पष्ट धर्मशास्त्र के मुद्दों पर अन्य विश्वासियों के साथ कैसे सहयोग कर सकते हैं, और हम नैतिक मामलों पर अन्य ईसाइयों के साथ कैसे सहयोग कर सकते हैं? क्या वहाँ कोई सहयोग है? क्या हम पहुँच सकते हैं? क्या इंजीलवादी अन्य ईसाइयों तक पहुँच सकते हैं और इस तरह की चीजों के बारे में बात कर सकते हैं? और हाँ, उन्हें ऐसा करना चाहिए। साथ ही, जब समूह उनके पास कुछ मुद्दों पर चर्चा करने के लिए आते हैं, तो उन्हें इसे स्वीकार करना चाहिए।

उन्हें कहना चाहिए, हम इस चर्चा से खुश हैं। तो, यह अन्य ईसाइयों के साथ सहयोग है। मुझे कई वर्षों तक अपने संप्रदाय की अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत परिषद में शामिल होने का सौभाग्य मिला।

अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत परिषद दुनिया के विभिन्न भागों से हमारे संप्रदाय के कई लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए, हम एक बहुत ही विविध समूह हैं। उन वर्षों के दौरान जब मैं अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत परिषद में था, दो समूह हमारे पास आए और कहा कि हम आपसे नैतिकता के बारे में बात करना चाहते हैं।

हम आपसे धर्मशास्त्र के बारे में बात करना चाहते हैं। हम आपसे इस बारे में बात करना चाहते हैं कि हमारे बीच क्या समानता है और शायद क्या समानता नहीं है। इसलिए, हमें उन समूहों के साथ चर्चा में भाग लेने की अनुमति दी गई।

अब, पहला समूह हमें बहुत अच्छी तरह से ज्ञात था। इसे वर्ल्ड मेथोडिस्ट काउंसिल कहा जाता है। यह दुनिया भर के मेथोडिस्ट संप्रदायों की एक परिषद है।

इसलिए, हमारे और उनके बीच बहुत कुछ समान था। और इसलिए चर्चाओं में भी, मेरा मतलब है, बहुत कम ऐसी बातें थीं जिन पर हम धार्मिक रूप से असहमत थे, लेकिन बहुत दिलचस्प चर्चाएँ थीं क्योंकि हमने इन विभिन्न मेथोडिस्ट संप्रदायों के बारे में बहुत कुछ सीखा और उन्होंने हमारे बारे में सीखा। हालाँकि, हमारे पास आने वाला दूसरा समूह हमारे लिए थोड़ा ज़्यादा दिलचस्प था क्योंकि हम उनके बारे में ज़्यादा नहीं जानते थे।

और वे सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट थे। सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट हमारे पास आए और कहा, हम आपके साथ हमारे और आपके जीवन में धर्मशास्त्र और नैतिकता के बारे में कुछ चर्चा करना चाहते हैं और इसी तरह। और यह एक बहुत ही दिलचस्प अनुभव था क्योंकि मैं सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट के बारे में कुछ भी नहीं जानते हुए उस बातचीत में शामिल हुआ था।

और ये सत्र लंबे समय तक चलते थे, और कभी-कभी हम उन्हें अपने मुख्यालय में आमंत्रित करते थे, और वे हमें अपने विश्व मुख्यालय में आमंत्रित करते थे और इसी तरह। तो, यह बहुत ही दिलचस्प था। लेकिन सातवें दिन के एडवेंटिस्ट और मुझे याद है कि हम रूढ़िवादी धर्मशास्त्र और बुनियादी इंगील धर्मशास्त्र के संदर्भ में बहुत सी चीजों पर सहमत थे, लेकिन कुछ चीजें थीं जिन पर हम पूरी तरह सहमत नहीं थे, और हम उनसे सीख रहे थे।

और, बेशक, सबसे दिलचस्प बात जो हमने उनसे सीखी वह थी सब्बाथ डे का सम्मान करना। जब हम शुक्रवार को लगभग 12 बजे उनके विश्व मुख्यालय में थे, तो वह स्थान मूल रूप से बंद हो गया क्योंकि उन सभी लोगों को घर वापस जाना था और सब्बाथ के लिए तैयार होना था। यह उनका सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट है।

इसलिए, उन्हें शुक्रवार रात से शनिवार रात तक की तैयारी करनी होगी। यह सब्त है। और जहाँ तक उनका सवाल है, हम ईसाईयों ने 10 आज्ञाओं में से एक को छोड़ दिया है, जब हम सब्त के बजाय रविवार को पूजा करते हैं।

और इसलिए, वे इस बारे में बहुत, बहुत, बहुत तरह के यहूदी हैं और घर लौटते हैं, भोजन तैयार करते हैं, शुक्रवार की रात को चर्च जाते हैं। यह एक प्रमुख सेवा है, शनिवार की सुबह, शनिवार की दोपहर। इसलिए, सीखने के लिए बहुत कुछ है, इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन इस तरह का सहयोग।

तीसरी बात दूसरी बात से संबंधित है, लेकिन यह एक अर्थ में अधिक केंद्रित है। तीसरी बात यह है कि इंगीलवादी रोमन कैथोलिकों के बारे में बहुत कुछ सीख रहे हैं, और रोमन कैथोलिक इंगीलवादियों के बारे में बहुत कुछ सीख रहे हैं। अब, हमने इस परिसर में रोमन कैथोलिकों और इंगीलवादियों के बीच संवाद किया है। यह कुछ साल पहले की बात है, लेकिन इंगीलवाद और रोमन कैथोलिकवाद के बारे में चर्चाएँ होती हैं, हमारे बीच क्या समानता है, हम कहाँ सहमत हैं, हम कहाँ असहमत होने के लिए सहमत हैं, और इसी तरह की अन्य बातें।

तो इस तरह से भविष्य में प्रतिबद्धताओं को समझना महत्वपूर्ण है। तो यह महत्वपूर्ण है। तो मैं इसे ही इंजीलवाद के सिद्धांत कह रहा हूँ।

अब, क्या इस बारे में कोई सवाल है, मेरा मतलब है, मैंने चुना है, हाँ, अन्ना। तो, क्या ये चीज़ें कहाँ से हैं? उनमें से कुछ हैं, लेकिन सभी नहीं। कौन सी चीज़ है? मुझे उस पर जाँच करनी होगी, अन्ना।

मैं अनुमान लगा रहा हूँ, हाँ, मैं अनुमान लगा रहा हूँ, आप जानते हैं, मैं अनुमान लगा रहा हूँ कि अस्सी के दशक के अंत में, नब्बे के दशक की शुरुआत में, कुछ ऐसा ही। लेकिन हाँ, हम इस क्लास के खत्म होने के बाद इसे गूगल कर सकते हैं। गूगल करें, लेकिन मुझे यकीन नहीं है।

क्या आप में से किसी ने संयोग से वह किताब पढ़ी है? क्या आप में से किसी ने एलिस्टेयर मैकग्राथ की कोई किताब या कोई कोर्स या कुछ भी पढ़ा है? एलिस्टेयर मैकग्राथ, वर्ड्स ऑफ हैंड्स? नहीं। ठीक है। भगवान आपका भला करे।

ठीक है। तुम्हें उसे अपनी पढ़ने की सूची में शामिल करना होगा। तुम्हें, बस यही करना है।

अगर आप एलिस्टेयर मैकग्राथ की सिर्फ़ एक किताब ही पढ़ लें, तो भी वह बहुत पठनीय है। वह एक विद्वान है जो सोचता है कि उसके पास महान विचार हैं, लेकिन उसके पास इन विचारों को इस तरह से संप्रेषित करने का एक तरीका है कि हर कोई सब कुछ समझ सकता है। तो, हाँ।

ठीक है। मुझे थोड़ा आश्चर्य है कि आप एलिस्टेयर मैकग्राथ को नहीं पढ़ रहे हैं या गॉर्डन में अन्य पाठ्यक्रम नहीं ले रहे हैं। तो, उन्होंने यहाँ कई बार भाषण दिया है।

मुझे लगता है कि वह पिछले साल ही यहाँ आए थे। मुझे लगता है कि वह यहाँ थे। इन सिद्धांतों के बारे में अन्य प्रश्न? यह वही है जिसके बारे में हम यहाँ बात कर रहे हैं, यह गॉर्डन कॉलेज है।

तो, आपको यह समझ आ गया। ठीक है। चलिए अब, क्षमा करें, सुसमाचारवाद की कमज़ोरियों पर चलते हैं।

अब, इंजीलवाद की कमज़ोरियों के बारे में अच्छी बात यह है कि कमज़ोरियों को अंदर से ही उजागर किया जाता है। यह इंजीलवादियों द्वारा इंजीलवाद की आलोचना है।

इंजीलवाद को इंजीलवाद की आलोचना करने के लिए बाहर से लोगों की ज़रूरत नहीं है, हालाँकि लोग स्पष्ट रूप से ऐसा करते हैं। लेकिन वास्तव में इसकी ज़रूरत नहीं है क्योंकि हमारे पास इंजीलवाद की आलोचना करने के लिए अंदर से बहुत दृढ़ निश्चयी इंजीलवादी हैं। इसलिए, हम कमज़ोरियों को दूर करते हैं।

इसके लिए माफ़ी चाहता हूँ। सर्दी से काँप नहीं रहा है, और मेरी आवाज़ भी ठीक है। मैं बस पानी पीकर अपना बचाव करने जा रहा हूँ।

शुक्रिया। मुझे ऐसा करना पसंद नहीं है, लेकिन मुझे ऐसा करने देने के लिए शुक्रिया। ठीक है।

तो यहाँ कुछ हैं। नंबर एक चर्च परंपरा की समृद्धि की सराहना करने में विफलता है। अब इससे मेरा मतलब है चर्च परंपरा के सौंदर्य संबंधी आयाम, 2000 वर्षों से ईश्वर के चर्च का महान जीवन और पूजा पद्धति।

अक्सर, इंजीलवादी उस समृद्ध परंपरा की सराहना नहीं करते हैं। और इंजीलवादी कभी-कभी आपको यह आभास देते हैं कि चर्च की शुरुआत आज ही इंजीलवाद से हुई है, और वे यह भूल जाते हैं कि नहीं, इसका 2000 साल का इतिहास है, जो एक बहुत ही समृद्ध और पुरस्कृत इतिहास है, एक बहुत ही गहरी जड़ें वाला, अद्भुत, सुंदर इतिहास है। और जैसा कि मैं कहता हूँ, अक्सर मैं इसे चर्च के जीवन और चर्च की पूजा-पद्धति में पाता हूँ।

अब, ऐसे कई इंजीलवादी हैं जिन्हें मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ और जिन्हें आप भी जानते होंगे, लेकिन ऐसे कई इंजीलवादी भी हैं जो रोमन कैथोलिक धर्म या पूर्वी रूढ़िवादी धर्म में चले गए हैं। ऐसा होने का कारण यह है कि उन्हें लगा कि इंजील समुदाय में पले-बढ़े होने के कारण, उनके पास बहुत समृद्ध धार्मिक, समृद्ध ईसाई इतिहास वाला जीवन नहीं था, और वे इसकी कमी महसूस कर रहे थे। और उन्होंने इसे एंग्लिकनवाद, रोमन कैथोलिकवाद या पूर्वी रूढ़िवादी धर्म में पाया है।

तो बहुत से लोगों ने उस तीर्थयात्रा को अपनाया, और इस बारे में कोई संदेह नहीं है। तो यह एक बात है। दूसरी बात 19वीं सदी की इंजील परंपरा की सामाजिक प्रतिबद्धताओं के प्रति वफादार बने रहने में विफलता थी।

अब, याद कीजिए कि हमने फिन्नी के बारे में क्या कहा था: फिन्नी ने एक तरफ सुसमाचार का प्रचार करने और लोगों को प्रभु के लिए जीतने और दूसरी तरफ उन्मूलनवादी होने के बीच कोई अंतर नहीं देखा। उन्होंने नहीं देखा, और यहाँ बिल्कुल भी कोई विरोधाभास नहीं था। यह सब एक ही सुसमाचार का हिस्सा है।

तो, 19वीं सदी में, कई इंजीलवादियों के साथ, इस देश में उन्मूलन, मंत्रालय में महिलाओं और गरीबों की देखभाल जैसे सामाजिक मुद्दे थे। तो जो हुआ वह यह था कि डोनाल्ड डेटन नाम का एक इंजीलवादी आया, और उसने डिस्कवरिंग एन इवेंजेलिकल हेरिटेज नामक एक किताब लिखी। वह जो कर रहा है वह 19वीं सदी में इंजीलवाद को देखना और उसकी तुलना 20वीं सदी के मध्य में इंजीलवाद से करना है।

तो यह वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। मैं यहाँ सिर्फ एक चीज़ की ओर मुड़ रहा हूँ। मुझे यहाँ हमारे पाठ्यक्रम में सिर्फ एक चीज़ की जाँच करनी है।

मैं जब यह करूँगा तो आपके साथ रहूँगा। ठीक है, मैं इसे कक्षा के बाद कर सकता हूँ। तो, 19वीं सदी में इंजीलवाद, वह कह रहा है कि हमने उस इंजील विरासत को नहीं रखा है।

वह बहुत चतुर है; वह प्रशिक्षण से इतिहासकार है। तो यह अंदर से दूसरी आलोचना है। वह अंदर से एक इंजीलवादी है। हमने इसे बनाए नहीं रखा है।

अब सवाल यह है कि क्या हम उसी स्थिति में वापस जा रहे हैं? खैर, मुझे नहीं पता। तीसरा, इवेंजेलिकलिज्म में, कई बार, बौद्धिक उथल-पुथल देखने को मिली है। अब, कुछ साल पहले मार्क नोल की एक ब्लॉकबस्टर किताब आई थी।

अब, एक नाम है जिससे आप परिचित हैं। हमने मार्क नोल का ज़िक्र किया। मार्क नोल ने द स्कैंडल ऑफ़ द इवेंजेलिकल माइंड नामक एक किताब लिखी है।

और पहला वाक्य, अब यह एक इंजीलवादी है जो इंजीलवादियों से बात कर रहा है, लेकिन पहला वाक्य कहता है कि इंजीलवादी दिमाग का घोटाला यह है कि उनमें से कोई भी बहुत कुछ नहीं है। ओह। ठीक है, तो यह स्वीकार करना थोड़ा मुश्किल था, लेकिन वह सही था।

हमने अपना बौद्धिक होमवर्क नहीं किया है। और हमें इस बारे में काम करना चाहिए। और वह इसका एक अच्छा मॉडल और एक अच्छा उदाहरण था, इसमें कोई संदेह नहीं है।

और अभी भी एक अच्छा मॉडल और उदाहरण है। एक इतिहासकार के रूप में प्रशिक्षित, अब जैसा कि हमने उल्लेख किया है, अब नोट्रे डेम में पढ़ा रहे हैं। लेकिन उन्होंने इसे इंजीलवाद की वास्तविक कमजोरी के रूप में देखा और वास्तव में इंजीलवादियों को बहुत आलोचनात्मक, बहुत गंभीरता से सोचना शुरू करने के लिए प्रेरित किया।

तो द स्कैंडल ऑफ़ द इवेंजेलिकल माइंड एक ब्लॉकबस्टर किताब है। और नंबर चार अक्सर संस्कृति के लिए एक समायोजन है। और डेविड वेल्स, जो गॉर्डन-कॉनवेल में पढ़ाते हैं, मुझे लगता है कि वे अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं लेकिन गॉर्डन-कॉनवेल में पढ़ाते हैं।

डेविड वेल्स ने एक किताब लिखी है जिसका नाम है द रियलिटी ऑफ़ टुथ इन ए वर्ल्ड ऑफ़ फेडिंग ड्रीम्स। और उस किताब में, उन्होंने वास्तव में इवेंजेलिकल्स को संस्कृति के अनुकूल होने के लिए फटकार लगाई है ताकि आप इवेंजेलिकल्स को व्यापक संस्कृति से अलग न बता सकें। यहाँ कोई भेद नहीं है।

और वह इवेंजेलिकल पर बहुत कठोर है, जिनके लिए कोई भेदभाव नहीं है। हम अभी व्यापक संस्कृति में डूबे हैं, और हमने व्यापक संस्कृति को आत्मसात कर लिया है। हम व्यापक संस्कृति का हिस्सा हैं, और हम व्यापक संस्कृति से बात नहीं करते हैं या व्यापक संस्कृति का न्याय नहीं करते हैं। इसलिए, इवेंजेलिकलिज्म की कमजोरियाँ बहुत मजबूत हैं, लेकिन सभी अंदर से हैं।

मुझे इसमें यही पसंद है। हमें बाहर के लोगों की ज़रूरत नहीं है, हालाँकि बाहर बहुत से आलोचक हैं, लेकिन हमारे अंदर से ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि इंजीलवादियों में कुछ गंभीर कमजोरियाँ हैं जिनसे उन्हें जूझना होगा, और उन्हें इसके बारे में पता होना चाहिए, और उन्हें इसके बारे में कुछ करना चाहिए। ठीक है, मैं इंजीलवाद की कमजोरियों पर यहीं रुकता हूँ।

क्या यहाँ कमज़ोरियों के बारे में कुछ कहा जा सकता है? यहाँ वो बातें हैं जिनसे हमें निपटना होगा। इसमें कोई संदेह नहीं है। हाँ।

सही है। यह निश्चित रूप से एलिस्टेयर मैकग्राथ के बिंदु पर वापस जाता है कि इंजीलवादियों को सार्वजनिक नीति का हिस्सा होना चाहिए, और एक अर्थ में वे बन भी रहे हैं। वेल का कहना है कि जैसा कि उन्होंने इंजीलवादियों को देखा है, हमने अक्सर संस्कृति के साथ तालमेल बिठाया है, कि आप हमें संस्कृति से अलग नहीं बता सकते।

हम संस्कृति के आगे झुक गए हैं, उन्हें लगता है। तो हाँ, मुझे लगता है कि आप इस बात में अंतर कर सकते हैं कि एक तरफ़ सार्वजनिक नीति पर काम करने के लिए इंजीलवादियों को क्या करना चाहिए और दूसरी तरफ़ हमने संस्कृति को कहाँ समायोजित किया है ताकि हम अब संस्कृति का न्याय न कर सकें। ये बारीक रेखाएँ हैं, शायद कभी-कभी। इंजीलवाद की आलोचनाओं के बारे में कुछ और, जो सभी इंजीलवादियों द्वारा की जाती हैं।

ठीक है, चलिए व्याख्यान संख्या 18 पर चलते हैं। हम पाठ्यक्रम के पृष्ठ 17 पर इसका शीर्षक दे रहे हैं। हम आधुनिक दुनिया में अमेरिकी ईसाई धर्म हैं।

मैं इस तरह के समापन व्याख्यान में जो करना चाहता हूँ वह यह है कि मैं अमेरिकी ईसाई धर्म का सकारात्मक मूल्यांकन और नकारात्मक आलोचना दोनों देना चाहता हूँ। इसलिए हम यहाँ यही करने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए, जब आप इसे लिख रहे हैं, तो मैं यहाँ सिर्फ़ एक बात पर ध्यान दे रहा हूँ।

हमने शुक्रवार को और अगले बुधवार को भी इसका उल्लेख किया था, इसलिए अपनी सभी पाठ्यपुस्तकें लाना सुनिश्चित करें। तो, हमने इसका उल्लेख किया, है न? हमने लेख में रौशनबुश को शामिल किया है। तो, हमने यह कहा है।

ठीक है, आधुनिक दुनिया में अमेरिकी ईसाई धर्म। सकारात्मक क्या हैं? नकारात्मक क्या हैं? फिर, अगले सोमवार को, जब हम एक साथ इस बारे में बात करेंगे कि आप कहाँ से हैं और आपने इस पाठ्यक्रम में क्या सीखा है, तो आप इनमें से कुछ को चुनना चाहेंगे। तो, क्षमा करें।

ठीक है, मेरे पास यहाँ नाम हैं, और मुझे लगता है कि हमने उन सभी से निपटा है। इसलिए, मुझे नहीं लगता कि मुझे यहाँ किसी नाम की आवश्यकता है। ठीक है, और मुझे लगता है कि हमने शायद इन ग्रंथों से भी निपटा है।

डोनाल्ड डेटन का पाठ है। हमने इस बारे में बात की है। एक स्कैन है, और यहाँ भगवान जाने कैसे पाठ है।

ठीक है, सकारात्मक मूल्यांकन। ठीक है, अमेरिकी ईसाई धर्म के संदर्भ में मेरी हिट परेड में नंबर एक संप्रदायों की समृद्ध विरासत होगी। मैं संप्रदायवाद को एक समस्या के रूप में नहीं देखता।

मैं संप्रदायवाद को एक उपहार के रूप में देखता हूँ। और मुझे पता है कि हमारे पास बहुत सारे संप्रदाय हैं, और शायद कभी-कभी हमारे पास उनमें से बहुत सारे होते हैं, लेकिन संप्रदायों की एक समृद्ध विरासत है। वे सभी प्रकार की धार्मिक पृष्ठभूमि, जातीय पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि संप्रदाय जीवन की समृद्धि अमेरिकी जीवन में एक अच्छी बात है।

इसलिए, मुझे लगता है कि मैंने इसे सकारात्मक रूप में रखा है। इसलिए, नंबर दो, अमेरिका में, मुझे लगता है कि सामान्य तौर पर, मेरा मतलब है, यह एक सामान्य बात है। आम तौर पर, अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में, अमेरिकी संप्रदायिक जीवन में, अमेरिकी ईसाई जीवन में एक-दूसरे के प्रति सहिष्णुता रही है।

इसमें कोई संदेह नहीं है। अब मुझे पता है कि कभी-कभी प्रोटेस्टेंटों में कैथोलिक विरोधी भावनाएँ भी रही हैं। यह सच है।

इसमें कोई संदेह नहीं है। हम इस पर पर्दा नहीं डालना चाहते, लेकिन कई बार कैथोलिकों में भी प्रोटेस्टेंट विरोधी भावनाएँ रही हैं। यह दोनों तरफ़ से काम करता है।

मुझे लगता है कि अब हम उससे कहीं आगे निकल चुके हैं, लेकिन मुझे सामान्य तौर पर सहनशीलता की ऐसी भावना पसंद है। साथ ही, तीसरी बात यह है कि हमारे पास एक मजबूत सामाजिक विवेक है। हमने एक तरह से दुनिया का नेतृत्व एक मजबूत सामाजिक विवेक के साथ किया है।

और मैं इसके दो उदाहरण दूंगा। और पहला उदाहरण आप बहुत अच्छी तरह से जानते हैं क्योंकि आपने किताब को तीन बार पढ़ा है, और आप बस यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि रौशनबुश पर उस किताब में हर छोटी-बड़ी बात आपको समझ में आए। लेकिन इसका एक बेहतरीन उदाहरण रौशनबुश है, है न? और पूरा सामाजिक सुसमाचार आंदोलन, मजबूत सामाजिक विवेक।

और दूसरा उदाहरण मार्टिन लूथर किंग जूनियर का है, क्योंकि रौशनबुश की तरह वे भी चर्च में पले-बढ़े थे। मार्टिन लूथर किंग जूनियर का संदेश एक ऐसा संदेश था जिसे उन्होंने चर्च में विकसित किया था। और इसलिए रौशनबुश और मार्टिन लूथर किंग जूनियर दोनों के लिए वह मजबूत सामाजिक चेतना चर्च से आई।

यहीं पर यह अंतर्निहित था। नंबर चार एक चौथी बात है जो मुझे लगता है कि सकारात्मक है, और हमने अमेरिकी ईसाई धर्म में कुछ बहुत ही उल्लेखनीय लोगों को जन्म दिया है। इस बारे में कोई संदेह नहीं है।

हमने कुछ उल्लेखनीय पुरुष और कुछ उल्लेखनीय महिलाएँ पैदा की हैं। पुरुषों में, ज़ाहिर है, वे ज़्यादा मुख्यधारा के हैं, है न? क्योंकि हमने महिलाओं के बारे में जो कहा है वह अमेरिकी ईसाई धर्म में है, उन्हें अक्सर चीज़ों के हाशिये पर काम करना पड़ता है, और उन्हें बड़े पैमाने पर

सांप्रदायिक जीवन के हाशिये पर प्रभाव डालना पड़ता है। उनमें से कुछ ने रूढ़िवाद पर अपना प्रभाव डाला है, और उनमें से कुछ ने नहीं।

लेकिन कुछ पुरुषों के मामले में, आप उनका नाम ले सकते हैं। मेरा मतलब है, जोनाथन एडवर्ड्स या वाल्टर रौशनबुश या बिली ग्राहम या ऐसे ही लोग। जिन महिलाओं के साथ हम काम करते हैं, उनके मामले में, कल हम मैरी बेकर एडी से मिलने जा रहे हैं, उदाहरण के लिए।

अब, इस महिला से मुकाबला किया जाना चाहिए, इसमें कोई संदेह नहीं है। यह एक ऐसी महिला है जो बहुत महत्वपूर्ण है, मुझे लगता है, इवेंजेलिन बूथ की मेरी अपनी परंपरा से, जिसने 30 साल तक अमेरिका में सेवा की। तो, अमेरिकी ईसाई इतिहास में कुछ बहुत ही उल्लेखनीय लोग हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है, अमेरिकी ईसाई इतिहास।

मेरे हिसाब से पाँचवाँ नंबर कॉलेजों और विश्वविद्यालयों का ईसाई धर्म से संबंध है। यह कहानी बहुत ही रोचक है। हार्वर्ड की स्थापना क्यों की गई? प्रिंसटन की स्थापना क्यों की गई? येल की स्थापना क्यों की गई? डार्टमाउथ की स्थापना क्यों की गई? और यह एक अविश्वसनीय कहानी है।

और जब विश्वविद्यालयों की पहली लहर एक अलग तरह से आगे बढ़ी, तो आपको 19वीं सदी में कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की एक और पूरी लहर मिली, जो हार्वर्ड, प्रिंसटन, येल ने जो किया, उसे फिर से दोहरा रही थी। उदाहरण के लिए, अमेरिका में ईसाई इतिहास की कहानी में ओबरलिन कितना महत्वपूर्ण है? यह एक उन्मूलनवादी संस्थान और चार्ल्स ग्रैडिसन फिनी के रूप में बहुत महत्वपूर्ण है। तो यह एक तरह की दूसरी लहर है।

फिर, आपको बाइबिल संस्थानों के साथ तीसरी लहर मिलनी शुरू होती है। जब कॉलेज और विश्वविद्यालय अपने कामों में विश्वास नहीं रख रहे थे, तो आपको बाइबिल संस्थान मिला, इसलिए आपको गॉर्डन कॉलेज और बैरिंगटन कॉलेज मिले जो ईसाई उच्च शिक्षा की तीसरी लहर की तरह थे। इसलिए, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के बीच संबंध ईसाई धर्म के लिए वास्तव में महत्वपूर्ण है।

तो अब मैं आज ईसाई कॉलेजों के बारे में बात करूँगा, इस तीसरी लहर के बारे में। मैं गॉर्डन कॉलेज या बैरिंगटन कॉलेज के बारे में बात करूँगा। बाकी दुनिया में ऐसा कुछ नहीं है।

यह अमेरिकी इंजील ईसाई कॉलेजों के लिए अद्वितीय है। आपके पास कुछ हद तक है, आपके पास कनाडा में इसका थोड़ा सा हिस्सा है, लेकिन बहुत ज्यादा नहीं। कनाडा में आपके पास इस तरह के कई कॉलेज और विश्वविद्यालय नहीं हैं।

यूरोप में, वे आम तौर पर अमेरिकी परंपरा की यूरोपीय अभिव्यक्ति हैं। तो यह एक अमेरिकी घटना है, कि वहाँ सभी ईसाई कॉलेज और विश्वविद्यालय होंगे, निश्चित रूप से ईसाई, और उनमें से कई निश्चित रूप से इंजीलवादी होंगे। तो यह परिदृश्य में एक नई बात है।

मुझे लगता है कि एक और सकारात्मक बात यह है कि सुसमाचार प्रचार पर जोर दिया गया है। अमेरिकी प्रथम महान जागृति, द्वितीय महान जागृति, फिनेइट पुनरुद्धार, मूडी पुनरुद्धार और

बिली ग्राहम पुनरुद्धार में हमने सुसमाचार प्रचार पर जो जोर दिया है, उसके बारे में सोचें। अमेरिकी ईसाई धर्म ने सुसमाचार प्रचार पर जो जोर दिया है, उसके बारे में सोचें, जिसने निश्चित रूप से दुनिया के बाकी हिस्सों को प्रभावित किया है।

तो, मैं कहूंगा कि सुसमाचार प्रचार। अगली बात यह है कि अमेरिकी चर्च ने चर्च में अक्सर एक बहुत ही भविष्यसूचक भूमिका निभाई है। इसलिए अमेरिकी ईसाई धर्म ने अक्सर एक बहुत ही भविष्यसूचक भूमिका निभाई है।

देखिए अमेरिकी ईसाइयों ने गुलामी के उन्मूलन के लिए क्या किया। बहुत, बहुत महत्वपूर्ण। रोमन कैथोलिक धर्म में, अमेरिकी महिलाएं ही हैं जो दीक्षा के मार्ग पर आगे बढ़ रही हैं।

अब, मैं अपने जीवनकाल में रोमन कैथोलिक महिलाओं को नियुक्त होते हुए नहीं देख पाऊंगा। आप इसे अपने जीवनकाल में देख सकते हैं, लेकिन शायद नहीं। चीजों को काम करने में कुछ साल लगते हैं, शायद दो हजार साल।

इसलिए, काम करने में थोड़ा समय लगता है। लेकिन अमेरिकी रोमन कैथोलिक महिलाएँ ही इस मामले में आगे हैं। वे रोमन कैथोलिक चर्च में महिलाओं के लिए समन्वय चाहती हैं।

सामाजिक मुद्दों से निपटने की कोशिश की है। मैं एक का उल्लेख करने जा रहा हूँ जिसका हमने पाठ्यक्रम में उल्लेख नहीं किया है।

लेकिन आज के महत्वपूर्ण मुद्दों पर बात करने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं बोस्टन लैटिन स्कूल का जिक्र करने जा रहा हूँ। बोस्टन लैटिन स्कूल की स्थापना 350 साल पहले हुई थी।

मुझे बोस्टन लैटिन स्कूल की स्थापना की सही तारीख याद नहीं है, लेकिन वह सार्वजनिक शिक्षा प्यूरिटन द्वारा शुरू की गई थी। प्यूरिटन बच्चों के लिए सार्वजनिक शिक्षा की आवश्यकता महसूस करते थे। इसलिए, सार्वजनिक शिक्षा चर्च की परंपरा और शिक्षा के प्रति ईसाई प्रतिबद्धता से शुरू हुई।

अब, मुझे पता है कि आप कभी भी यह कहानी नहीं सुनेंगे कि अमेरिका में शिक्षा की शुरुआत ईसाइयों से हुई थी, और इसी कारण से, लेकिन यह कहानी का वह हिस्सा है जिसे याद रखना ज़रूरी है। तो, यह अमेरिकी ईसाई धर्म के संदर्भ में एक सकारात्मक मूल्यांकन है। अब, इससे पहले कि मैं नकारात्मक आलोचनाओं पर आऊँ, मुझे नकारात्मक आलोचनाओं पर खत्म करना पसंद नहीं है, लेकिन शायद यह हमें कुछ चीजों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करेगा।

लेकिन क्या ऐसी कोई अन्य सकारात्मक बातें हैं जिनके बारे में आप सोच सकते हैं कि अमेरिकी ईसाई धर्म ने क्या-क्या किया है? अब जबकि आप इतिहास, संप्रदायों, लोगों के बारे में पर्याप्त जानते हैं, तो क्या आप अमेरिकी ईसाई धर्म द्वारा उत्पन्न अन्य बातों के बारे में सोच सकते हैं जो आपको लगता है कि वास्तव में अच्छी चीजें हैं, वास्तव में सहायक चीजें हैं? हमने अमेरिकी ईसाई धर्म में ऐसा क्या किया है जो सहायक और अच्छा और सकारात्मक और स्थायी है? क्या आप ऐसी चीजों के बारे में सोच सकते हैं जिनके बारे में हमने अभी तक बात नहीं की है? ठीक है। सिवाय

इसके कि राज्य क्या सिखाता है या चर्च क्या सिखाता है। और यह एक अच्छी बात है क्योंकि हमने जो कुछ भी देखा है, रोजर विलियम्स जैसे लोगों से शुरू करते हुए, अपनी तरह की विचार की स्वतंत्रता का उपयोग करते हुए कहते हैं, मैं इससे बाध्य नहीं होने जा रहा हूँ।

और इसलिए, उन्हें ऐसा करने की स्वतंत्रता थी। यह अमेरिकी संस्कृति के भीतर है। उदाहरण के लिए, संप्रदायों के बारे में विचार।

इसके अलावा, संप्रदाय सिर्फ रूढ़िवादी समुदाय नहीं है, बल्कि उसके भीतर का समुदाय भी है। आप रूढ़िवादी को मानते हैं, और आप धर्मनिरपेक्ष को भी मानते हैं। ठीक है।

ठीक है, ठीक है। और यह अमेरिकी सांस्कृतिक जीवन का हिस्सा है, है न? कि हमारे पास विचार की स्वतंत्रता है। हाँ।

क्या आप कुछ और सोच सकते हैं? अमेरिकी ईसाई धर्म, हमने दुनिया को क्या दिया है जो मददगार है? हाँ, अलेक्जेंडर? मिशन पर ध्यान केंद्रित करें। ठीक है। हाँ।

सही है। मिशन पर ध्यान केंद्रित करें। अमेरिकी ईसाइयों ने हमारे पूरे इतिहास में, मूल रूप से, जबरदस्त तरीके से मिशनों का समर्थन किया है, और आज भी करते हैं।

मिशन पर ध्यान केंद्रित करना एक अच्छी बात है। हाँ। कुछ और? अमेरिकी ईसाई धर्म, हमने दुनिया और बाकी ईसाई दुनिया को ऐसा क्या दिया है जो इतना महत्वपूर्ण है, क्या आपको लगता है? कुछ और? ये अच्छे विचार हैं जो हमने यहाँ प्रस्तुत किए हैं।

ठीक है। ठीक है। चलिए कुछ नकारात्मक आलोचनाओं पर नज़र डालते हैं।

मैं इस पर बात खत्म नहीं करना चाहता, लेकिन हम वैसे भी खुद को देख रहे हैं। तो, कुछ नकारात्मक बातें जो मुझे लगता है कि अमेरिकी ईसाई धर्म के लिए समस्याजनक हैं। एक यह है कि हमारे पूरे इतिहास में, चर्च और राज्य के बीच भ्रम की स्थिति रही है।

चर्च और राज्य के बीच अक्सर यह एक बहुत ही जटिल उलझन होती है। चर्च का काम क्या है? राज्य का काम क्या है? चर्च और राज्य को एक साथ जोड़कर, हम अमेरिकी जीवन में एक तरह का नागरिक धर्म पैदा करते हैं। और मुझे लगता है कि अमेरिकी जीवन में नागरिक धर्म एक तरह से बहुत ही अस्पष्ट हो सकता है।

लेकिन कई बार ऐसा हुआ है जब चर्च और राज्य के बीच भ्रम की स्थिति पैदा हो गई है। कभी-कभी, कुछ संप्रदाय यह सुनिश्चित करने में बहुत अच्छे रहे हैं कि हम इन दोनों को भ्रमित न करें, जैसे कि बैपटिस्ट चर्च। अमेरिकी जीवन में बैपटिस्ट, रोजर विलियम्स की महान परंपराओं में से एक यह है कि चर्च और राज्य, इन दोनों को भ्रमित न किया जाए।

उनमें से प्रत्येक का अपना क्षेत्र है और इसी तरह की अन्य बातें भी हैं। लेकिन कभी-कभी, चर्च और राज्य के बीच भ्रम हो सकता है, और यह बहुत, बहुत जटिल हो सकता है। एक और बात जो मैं कहूँगा वह अमेरिकी ईसाई धर्म की कमजोरी है, और वह है व्यक्तिवाद पर जोर।

अब, स्वाभाविक रूप से, व्यक्तिवाद पर जोर हमारी स्वतंत्रता के परिणामस्वरूप आता है, जैसा कि हमने अभी उल्लेख किया है, चुनने की स्वतंत्रता, हाँ कहने की स्वतंत्रता, ना कहने की स्वतंत्रता। हालाँकि, व्यक्तिवाद पर जोर, कभी-कभी अमेरिकी ईसाई धर्म में, शरीर की उपेक्षा, चर्च की उपेक्षा और विश्वासियों के समुदाय की उपेक्षा पर भी रहा है। और हमें इन दोनों चीजों को संतुलन में रखना होगा।

ईश्वर निश्चित रूप से व्यक्ति के साथ काम करता है, लेकिन ईसाई धर्म एक बहुत ही व्यक्तिगत धर्म है, लेकिन कभी भी निजी नहीं। यह हमेशा चर्च में, समुदाय में विश्वासियों के समूह में खुद को काम करता है। इसलिए व्यक्तिवाद पर अमेरिकी जोर कभी-कभी समस्याग्रस्त हो सकता है, जिससे ऐसा लगता है कि ईसाई धर्म केवल यीशु और मेरे बारे में है।

और ईसाई धर्म का मतलब सिर्फ यही नहीं है। इसलिए, तीसरी समस्या जो है, वह एक तरह से मिश्रित है। अमेरिकी कट्टरपंथ के मजबूत और कमजोर पक्ष हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अमेरिकी कट्टरपंथ के कमजोर पक्ष इतने सार्वजनिक थे।

और इसलिए अमेरिकी कट्टरपंथ की अपनी ताकत और कमजोरियाँ हैं, लेकिन कभी-कभी कमजोरियाँ जीत जाती हैं। इसीलिए इंजीलवाद का गठन हुआ। हालाँकि, मैं अमेरिकी कट्टरपंथ के बारे में कुछ कहना चाहूँगा।

यह वास्तव में अनोखा है। मूल रूप से, यह अमेरिकी जीवन के लिए अनोखा है। यदि आप अमेरिकी कट्टरपंथी परंपरा में पले-बढ़े हैं, तो जब आप दुनिया के अन्य हिस्सों की यात्रा करते हैं, तो आपको इस परंपरा के बारे में बहुत कुछ पता नहीं होता है, यहाँ तक कि उसी संप्रदाय के भीतर भी।

भले ही यह एक ही संप्रदाय में हो और आप दुनिया के दूसरे हिस्से में जाएं, और आप शायद एक कट्टरपंथी चर्च संप्रदाय में पले-बढ़े हों, और आप बाकी दुनिया में जाकर कहें, हम यह कर रहे हैं। वे हमेशा आपके द्वारा बताई गई बातों से सहमत नहीं हो सकते क्योंकि उन्हें यह नहीं पता कि अमेरिकी कट्टरवाद की संस्कृति और सामाजिक पृष्ठभूमि क्या है। इसलिए, उन्हें वह जानकारी नहीं है।

इसलिए, उस ज्ञान के बिना, वे यह नहीं समझ पाते कि इसने जो कुछ पैदा किया, वह क्यों हुआ। तो एक और तरह की नकारात्मक बात, और हम पहले ही, मुझे लगता है, कमजोरियों में इस बारे में बात कर चुके हैं, लेकिन कभी-कभी दुनिया भर में मसीह के शरीर की समृद्धि के बारे में एक बहुत ही अदूरदर्शी दृष्टिकोण हो सकता है। अमेरिकी अपने छोटे चर्च या अपने छोटे संप्रदाय पर इतना ध्यान केंद्रित कर सकते हैं कि वे इतिहास में चर्च की समृद्धि या दुनिया भर में चर्च की समृद्धि को भी नहीं पहचान पाते।

इसलिए, वे एक विश्व चर्च को मान्यता नहीं देते, एक विश्व चर्च को नहीं, लेकिन वे ईसाई धर्म को मान्यता नहीं देते क्योंकि यह दुनिया भर में विभिन्न परंपराओं में सेवा करता है। इसका एक अच्छा उदाहरण है जब सोवियत संघ ने लोगों के आने-जाने के लिए रास्ते खोल दिए, और आप में से कई लोग सोवियत संघ में गए मिशनरी समूहों के बारे में जानते होंगे। मैं खुद कुछ ऐसे लोगों को जानता हूँ जो रूस और यूक्रेन आदि में गए थे।

लेकिन जब यह खुला, जब सोवियत संघ में जाने के लिए मिशन खुले, तो वास्तव में टेलीविज़न पर कुछ समूह बाइबल का रूसी भाषा में अनुवाद करने के लिए पैसे मांग रहे थे। अब, इसमें एक छोटी सी समस्या है। बाइबल एक हजार साल से रूसी भाषा में है।

इसलिए, किसी को भी बाइबिल का रूसी भाषा में अनुवाद करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन यह एक बहुत ही संकीर्ण दृष्टिकोण है। यदि आपका दृष्टिकोण इतना संकीर्ण है, तो आपको नहीं लगता कि रूसी भाषा में बाइबिल हैं और एक हजार साल से हैं और हमें इन अनुवादों को लोगों के हाथों में देने की ज़रूरत है क्योंकि वे कभी भी अपनी भाषा में बाइबिल नहीं पढ़ पाए हैं।

यह बहुत ही संकीर्ण दृष्टिकोण है। यह बहुत ही संकीर्ण दृष्टिकोण है। यह केवल अमेरिकियों और ईसाई धर्म के बारे में हमारी जानकारी पर ही केंद्रित है।

तो यह एक संकीर्ण दृष्टिकोण है। दूसरी समस्या यह है कि अमेरिकी ईसाई धर्म में कई बार पाप और बुराई के बारे में बहुत ही कम दृष्टिकोण रहा है। पाप और बुराई के बारे में बहुत ही कम दृष्टिकोण और हमारी अपनी उपलब्धियों के बारे में एक उच्च दृष्टिकोण।

और मुझे लगता है कि हमें सावधान रहना चाहिए जब चर्च खुद को व्यापारिक दुनिया के अनुसार ढालता है। चर्च व्यापार के व्यवसाय में नहीं है। चर्च अपने काम को पूरा करने के लिए व्यापार का उपयोग करता है।

लेकिन यह व्यवसाय के व्यवसाय में नहीं है। लेकिन जब यह व्यवसाय में आता है, जब इसमें इस बात का उच्च दृष्टिकोण होता है कि वे क्या हासिल करने में सक्षम हैं और पाप और बुराई के बारे में कम दृष्टिकोण, या हमारे अपने कारणों के बारे में कम दृष्टिकोण कि हम जो कर रहे हैं वह क्यों कर रहे हैं, क्षमा करें, यह समस्याग्रस्त हो सकता है। तो, कैलिफोर्निया में एक प्रसिद्ध चर्च था, जिसका नाम नहीं बताया जाएगा, जो एक बहुत ही धनी चर्च था जिसने खुद को एक व्यवसाय के रूप में ढाला, पाप और बुराई के बारे में बहुत कम दृष्टिकोण, व्यक्तिगत उपलब्धि के बारे में बहुत उच्च दृष्टिकोण।

और वह चर्च अंततः डूब गया, वह 50 मिलियन डॉलर के कर्ज में डूब गया। आंशिक रूप से, उसके इतने कर्ज में डूबने का कारण यह था कि उसने अपने ही लोगों में पाप को नहीं पहचाना। उसने यह नहीं पहचाना कि वह चर्च ध्यान, दृश्यता, एक बड़ी संरचना का निर्माण, इत्यादि जैसी बहुत सी व्यक्तिगत ज़रूरतों पर आधारित था।

इसलिए कभी-कभी अमेरिकी ईसाई धर्म में, पाप और बुराई के बारे में इस तरह का निम्न दृष्टिकोण रहा है, हमारी अपनी उपलब्धियों की संभावना के बारे में एक उच्च दृष्टिकोण। और अंत में, निश्चित रूप से, अमेरिकी प्रोटेस्टेंटवाद के भीतर, मैं कहूंगा कि गंभीर सैद्धांतिक और धार्मिक प्रशिक्षण और जांच और जीवन में अमेरिकी प्रोटेस्टेंटवाद में वास्तविक गिरावट आई है। और अमेरिकी प्रोटेस्टेंटवाद में सहिष्णुता बहुत महत्वपूर्ण हो गई है।

सहिष्णुता इतनी महत्वपूर्ण हो गई है, एक तरह से महत्वपूर्ण चीज, कि कुछ अमेरिकी प्रोटेस्टेंटों के लिए, कुछ भी चलता है। और मेरे पास इसका एक उदाहरण है। मैं आपको बस एक मिनट का समय दूंगा।

डॉ. हिल्डेब्रांट और मैं लगभग हर साल जिन बैठकों में जाते हैं, उनमें से एक को अमेरिकन एकेडमी ऑफ रिलिजन और सोसाइटी ऑफ बाइबिलिकल लिटरेचर कहा जाता है। ये दोनों समूह हर साल एक साथ मिलते हैं। आमतौर पर हममें से लगभग 10,000 लोग एक साथ मिलते हैं।

अब, अमेरिकन एकेडमी ऑफ रिलिजन की शुरुआत हुई, मैं एसबीएल के बारे में जितना बोल सकता हूँ, उससे कहीं ज्यादा इसके बारे में बोल सकता हूँ, लेकिन अमेरिकन एकेडमी ऑफ रिलिजन की शुरुआत एक बहुत ही गंभीर धार्मिक, धर्मशास्त्र और अन्य बातों पर विद्वानों की चर्चा और बाइबिल धर्मशास्त्र से जुड़ी हर चीज़ के रूप में हुई। यह सिर्फ प्रोटेस्टेंट नहीं था, लेकिन यह काफ़ी हद तक प्रोटेस्टेंट था। लेकिन कैथोलिक आए और ईस्टर्न ऑर्थोडॉक्स आए।

अब जब आप आज अमेरिकन एकेडमी ऑफ रिलिजन की बैठकों में जाते हैं, तो आप कुछ सत्रों में रूढ़िवादी धर्मशास्त्र को मुश्किल से पहचान पाते हैं। और वास्तव में, ऐसे सत्र हैं जो ईसाई धर्म और ईसाई धर्मशास्त्र से इतने दूर हैं कि उन्हें पहचानना मुश्किल है। मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि आप अभी भी कार्ल बारथ या डिट्रिच बोनहोफर या इंजील धर्मशास्त्र पर गंभीर सत्र और चर्चाएँ पा सकते हैं।

इसलिए आप अभी भी वहाँ चीज़ें पा सकते हैं। और इसीलिए मैं जाता हूँ; मैं उन लोगों को ढूँढना चाहता हूँ जो इस चीज़ को गंभीरता से ले रहे हैं। लेकिन ऐसे बहुत से अन्य सत्र हैं जो धर्मग्रंथों के अधिकार या चर्च के अधिकार से बहुत दूर हैं, और मुझे यकीन नहीं है कि वे अभी भी अमेरिकन एकेडमी ऑफ रिलिजन में क्यों बने हुए हैं।

लेकिन 60 के दशक से ही प्रोटेस्टेंटिज्म के भीतर अमेरिकी धर्म के परिदृश्य में गिरावट आई है, खास तौर पर धार्मिक रूप से, इसमें कोई संदेह नहीं है। ठीक है, तो ये कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें हमें अमेरिकी ईसाई धर्म और इस पाठ्यक्रम में समझना चाहिए। और बस कुछ मिनटों के लिए, क्या कोई अन्य नकारात्मक चीज़ें हैं जिनके बारे में आप महसूस करते हैं? हाँ, पोर्टर।

मेरे पास इंजीलवाद के बारे में एक सवाल है क्योंकि आपने बताया कि यह किस तरह से इंजीलवाद से आया है, लेकिन फिर आप कुछ लोगों को इंजीलवाद विरोधी करार देते हैं। ठीक है। हाँ, यह एक अच्छा सवाल है।

इवेंजेलिकल शब्द की शुरुआत वास्तव में रिफॉर्मेशन के समय हुई थी। इसलिए, इवेंजेलिकल शब्द का इस्तेमाल रिफॉर्मेशन के बाद से उन ईसाइयों के बारे में बात करने के लिए किया जाता रहा है जो बाइबल और टिनिटी को गंभीरता से लेते हैं और मानते हैं कि मसीह कहानी का केंद्र है, इस तरह की बातें। और फिर चर्च के इतिहास में क्या हुआ? यह शब्द बार-बार सामने आता रहता है, इसलिए, उदाहरण के लिए, 18वीं सदी में वेस्लेयन पुनरुद्धार को इवेंजेलिकल पुनरुद्धार के रूप में लेबल किया गया था।

इससे हमारा मतलब था कि वेस्लेयन का मतलब था कि हम सुधारवादी समझ, बाइबल के महत्व और अनुग्रह और मसीह के महत्व आदि की ओर वापस जा रहे हैं। फिर, यह 19वीं सदी में पुनरुत्थान के साथ वापस आता है, और उन्हें इंजीलवादी के रूप में लेबल किया जाता है। और फिर इवांस द्वारा रौशनबुश को इंजीलवादी के रूप में लेबल किया जाता है।

फिर, 40 के दशक में इंजीलवाद को कट्टरवाद से अलग करने के लिए बहुत गंभीरता से इस्तेमाल किया गया। इसलिए, इसे फिर से बाइबल को गंभीरता से लेने, मसीह का महत्व, उन सभी बातों को बताने वाले वर्णनात्मक शब्द के रूप में इस्तेमाल किया गया। इसलिए, इस शब्द का इस्तेमाल चर्च के इतिहास के विभिन्न चरणों में सुधार के बाद से किया गया है।

तो, जो लोग कट्टरपंथ से अलग हो गए, उन्होंने कहा कि यह वह शब्द है जिसे हम चाहते हैं क्योंकि यह हमारे बारे में बहुत वर्णनात्मक है। हाँ। कुछ और।

हाँ। ओह, यह सही हो सकता है। यह एक नकारात्मक आलोचना होगी कि महिलाओं को चर्च जीवन की मुख्यधारा में अपना रास्ता खोजने में बहुत मुश्किल होती है।

अब, ऐसा वेस्लेयन समूहों के साथ ज्यादा होता है क्योंकि वे पुरुषों और महिलाओं की समानता में विश्वास करते हैं। उनका मानना है कि पेंटेकोस्ट के समय, जब पवित्र आत्मा बेटों और बेटियों पर उतरी, तो इस तरह की महान मुक्ति हुई, इत्यादि। यह एंग्लिकन चर्च जैसे कुछ चर्चों के साथ हो रहा है, जहाँ अब एंग्लिकन चर्च में महिलाएँ मंत्रालय में आ रही हैं।

लेकिन यह सही है। अमेरिकी ईसाई धर्म में महिलाओं को, सामान्य रूप से, सीमाओं पर काम करना पड़ा है क्योंकि मुख्य लाइन, मुख्यधारा, मंत्रालय में महिलाओं के लिए खुली नहीं थी। यह अब बदल रहा है।

और इसलिए, हम देखेंगे कि यह कहाँ जा रहा है, लेकिन अब यह बदल रहा है। लेकिन यह सही है। यह एक नकारात्मक आलोचना होगी कि, शुरू से ही, महिलाओं को ईसाई चर्च में उनके योगदान के लिए मान्यता नहीं दी गई।

ठीक है। हम इसे निर्यात करने की प्रवृत्ति रखते हैं। यह सच है।

और हम जो निर्यात कर रहे हैं वह अमेरिकी संस्कृति भी है, और अमेरिकी मूल्य भी, या अवमूल्यन, आप इसे जो भी कहना चाहें। लेकिन हम इसे बाकी दुनिया में निर्यात करते हैं और बातचीत में उनके योगदान को नहीं सुनते। यह सच है।

इसमें कोई संदेह नहीं है। हाँ। ठीक है।

ठीक है। यह सही है। यह सही है।

सही है। हाँ। यह बिलकुल सच है।

अमेरिकी असाधारणवाद समस्याग्रस्त रहा है और अभी भी बना हुआ है। और जैसा कि हमने कहा, निश्चित रूप से मिशनों के भीतर, हम न केवल सुसमाचार को ले जा रहे हैं, बल्कि हम पूरे सांस्कृतिक ढांचे को भी उस सुसमाचार तक ले जा रहे हैं, जो एक अमेरिकी ढांचा है। और हाँ, यह सच है।

हमें इससे सावधान रहना होगा। तो, कुछ नकारात्मक बातें। ठीक है।

तो हम कहाँ हैं? हम शुक्रवार को हैं। सारी किताबें कहाँ हैं? खैर, आपमें से कुछ लोगों से मैं कल मिलूँगा। आपमें से ज़्यादातर लोगों से मैं कल मिलूँगा।

वैसे, अगर आप बाहर जा रहे हैं या जोड़ रहे हैं, तो आपके पास थोड़ा सा मौका है, आखिरी मौका। आप में से कुछ लोग कल, शुक्रवार को सभी किताबें देखेंगे; सोमवार को, हम बैठकर स्वीकारोक्ति करेंगे, और फिर बुधवार को, हम सभी किताबें देखेंगे, और फिर अगले सोमवार को परीक्षा होगी।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 28 है, इंजीलवाद और मूल्यांकन।